



MP - PSC

राज्य सिविल सेवा

PRE

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग - 1

मध्य प्रदेश का इतिहास और भूगोल

MP-PSC PRE

मध्य प्रदेश का इतिहास और भूगोल

| S.No. | Chapter Name | Page No. |
|--------------------------------------|---|----------|
| इकाई -1 मध्य प्रदेश का इतिहास | | |
| 1. | मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास | 1 |
| 2. | 13-15वीं शताब्दी के दौरान मध्य प्रदेश | 4 |
| 3. | 1857 का विद्रोह | 20 |
| 4. | स्वतंत्रता आंदोलन में मध्य प्रदेश का योगदान | 33 |
| 5. | मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक पहलू | 38 |
| 6. | मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ | 63 |
| 7. | मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल | 70 |
| इकाई -3 मध्य प्रदेश का भूगोल | | |
| 8. | मध्य प्रदेश के भूगोल का परिचय | 96 |
| 9. | मध्य प्रदेश के भौतिक विभाग | 100 |
| 10. | मध्य प्रदेश की नदी और जल निकासी प्रणाली | 104 |
| 11. | मध्य प्रदेश में वन | 114 |
| 12. | मध्य प्रदेश की जैव विविधता | 121 |
| 13. | मध्य प्रदेश में जलवायु, मौसम और वर्षा | 127 |
| 14. | मध्य प्रदेश के प्राकृतिक और खनिज संसाधन | 130 |
| 15. | मध्यप्रदेश में परिवहन | 139 |
| 16. | कृषि | 147 |

1 CHAPTER

मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

मालवा का परमार राजवंश

- परमार अभिलेखों में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ द्वारा 'अबू पर्वत' पर आयोजित यज्ञ वेदी से हुई बताई गई है।
- अन्य अभिलेख - 'उदयपुर प्रशस्ति', 'नागपुर प्रशस्ति', 'वसंतगढ़ अभिलेख', 'पट नारायण अभिलेख', 'जैन अभिलेख'

उपेंद्र

- उन्हें राष्ट्रकूट सम्राट गोविंद-तृतीय द्वारा शासक नियुक्त किया गया था।
- 'उदयपुर प्रशस्ति' में उनकी प्रशंसा की गई।
- आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजनीतिक परिस्थितियों का लाभ उठाकर वह 'अवंती' के शासक बने।
- 818 ई. में गोविंद तृतीय की मृत्यु हो गई, जिसका लाभ उठाकर इन्होंने राज्य का विस्तार करना शुरू कर दिया और मालवा पर अधिकार कर लिया।

वैर सिंह

- उपेंद्र के पुत्र वैर सिंह उनके अगले उत्तराधिकारी बने।
- परमारों की प्रारंभिक राजधानी उज्जैन थी, लेकिन वैर सिंह द्वितीय के शासनकाल के दौरान, परमारों ने अपनी राजधानी को उज्जैन से धार में स्थानांतरित कर दिया।
- मालवा के परमार वंश के सियाक प्रथम का नाम उदयपुर प्रशस्ति में मिलता है।
- सियाक प्रथम के बाद 893 ई. तक उदयपुर प्रशस्ति में किसी राजा का उल्लेख नहीं मिलता।

कृष्णराज या वाक्पति ।

- यह प्रतिहार नरेश महेंद्र पाल (892-908 ई.), भोज II और महिपाल (912-942 ई.) तीनों के समकालीन थे।
- इनका नाम 'उदयपुर प्रशस्ति' और 'नवसाहसांकचरित' दोनों में वर्णित है।
- वाक्पतिप्रथम ने 'परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' की शाही उपाधि धारण की।

हर्ष / सियक II

- उन्हें "सिंह दत्त भट्ट" भी कहा जाता था।
- परमार वंश का पहला स्वतंत्र राजा सियक द्वितीय था।
- राष्ट्रकूट दक्षिण में केंद्रित थे और चोल संघर्ष में व्यस्त थे।
- ऐसे समय का लाभ उठाकर सियक द्वितीय ने तुरंत 949 ई. में 'महाराजधिराजपति' और 'महामंडलिक चूड़ामणि' की उपाधि धारण की।
- नवसाहसांकचरित' में 'सियक द्वितीय' की विजयों का विस्तृत उल्लेख मिलता है। उसने हूणों को भी पराजित किया।
- 'हूणमंडलिक' की स्थिति परमार और चेदि वंश के राज्यों के बीच यानी नर्मदा के उत्तर में आधुनिक 'होशंगाबाद' और 'महू' के बीच थी।
- चंदेल के खजुराहो शिलालेख (956 ई.) से पता चलता है कि यशोवर्मन चंदेल मालवा राजा के लिए मृत्यु के देवता थे।
- इस समय चंदेल का साम्राज्य विदिशा तक फैल गया और वह मालवा की सीमा में प्रवेश कर गया।
- सियक ने अंतिम काल में राष्ट्रकूटों की राजधानी 'मान्यखेत पर अधिकार कर लिया।

वाक्पति द्वितीय या मुंज या उत्पल (974 से 994 ई.)

- सिंधुराज (997-1000 ई.) - यह मुंज का छोटा भाई था, लेकिन मुंज को सिंधु राज के पुत्र भोज से अधिक लगाव था और उसे राजकुमार के रूप में नियुक्त किया।
- सिंधुराज ने नवसहसंक, नवीनसाहसंक, कुमार नारायण, अवंतीश्वर, परमार महाभारत, मालव राज की उपाधि धारण की।
- सिंधुराज ने हूणों पर विजय प्राप्त की। बड़नगर प्रशस्ति में इसका विशेष उल्लेख मिलता है। (1151 ई.)

राजा भोज (1000-1055 ई.)

- वह कला और संस्कृति के महान संरक्षक थे।
- भोजपुर शिव मंदिर का निर्माण किया।
- धार में संस्कृत सीखने के लिए भोजशाला खोली।
- इन्होंने चंदेल राजा विद्याधर पर हमला किया, लेकिन 1008 ई. में हार गये।
- भोज ने मोहम्मद गजनवी के खिलाफ हिंदुशाही राजा आनंदपाल की मदद की।
- 1047 में, चालुक्य राजकुमार सोमेश्वर प्रथम ने भोज को हराया और धार को लूट लिया, जिससे जल्द ही पुनः कब्जा कर लिया गया।
- उन्होंने भोपाल में भोजताल झील का निर्माण कराया।
- फरिश्ता के अनुसार राजा वर्ष में दो बार भोज का आयोजन करता था, जो 40 दिनों तक चलता था।
- रोहक इसके प्रधान मंत्री थे और कुलचंद्र, शाहद तथा सुरदित्य उनके तीन महान सेनापति थे।

साहित्य, कला और वास्तुकला

- वाक्पति द्वितीय मुंज एक कवि-हृदय राजकुमार थे, यशोरुपवलोक के लेखक धनिक, नवसाहसांकचरित के लेखक पद्मगुप्त, दशरूपक के लेखक धनंजय, उनके दरबार में रहते थे।
- राजा मुंज को कविवृष भी कहा जाता था।
- भोज कालीन या भोज के नाम से उपलब्ध ग्रंथों की सूची हाल ही में भगवती लाल राजपुरोहित की पुस्तक भोजराज में प्रकाशित हुई थी जो इस प्रकार है
 1. साहित्य शास्त्र: सरस्वती कांताभरन, श्रृंगार प्रकाश
 2. साहित्य: चंपू रामायण, श्रृंगार मंजरी कथा, सुभाषित प्रबंध, विद्या विनोद, शालिकथा, अवनिकुर्मसतर्क, कोदण्डकाव्य, महाकाली विजय, वाग्यदेवी स्तुति
 3. व्याकरण: प्राकृत व्याकरण, सरस्वती कठभरण
 4. कोष: नम्मलिका, अम्खायाख्या, अनेकार्थकोश
 5. संगीत: गीत प्रकाश
 6. इतिहास :- संजीवनी
 7. दर्शन: न्यायवार्तिक - तत्व प्रकाश, सिद्धान्त संग्रह, सिद्धान्त सार विधि, राज मार्तंड, योग सूत्र वृत्ति, शिव तत्व रत्न कालिका, तत्व चंद्रिका
 8. खगोल विज्ञान और ज्योतिष: आदित्य प्रताप सिद्धान्त, राजमार्तंड, राजमृगक, विद्वज्ञानवल्लभ (प्रश्न विज्ञान)

राजा भोज के साहित्य

- तत्व प्रकाश; समरगढ़-सूत्रधार, सिद्धान्त संग्रह
- अंतिम परमार राजा महलदेव था जो आइन-उल-मुल्क द्वारा 1305 ई.में पराजित हुआ।
- राजा भोज के बाद जयसिंह प्रथम, उदयादित्य, लक्ष्मदेव, नर्मदेव, यशोवर्मन, जयवर्मन, परमार महा कुमार आदि राजा बने।
- इसके बाद परमार साम्राज्य कई छोटे टुकड़ों में विभाजित हो गया, अंतिम राजा भोज द्वितीय था, जिसके बाद वर्ष 1305 की तारीख मालवा में महलकदेव के शासनकाल के रूप में जानी जाती है।
- सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने मालवा पर आक्रमण किया और उसे दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

कच्छपघात राजवंश

- कच्छपघात वंश मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग का एक महत्वपूर्ण राजवंश था।
- इसका मूल स्थान गोपाचल क्षेत्र है जिसके अंतर्गत मध्य प्रदेश के ग्वालियर, मुरैना, गिन्द, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर और दतिया जिले के क्षेत्र शामिल हैं।
- अतीत में, कच्छपघात गुर्जर प्रतिहार वंश के सामंत के रूप में काम करता है।

देव वर्मन

- ग्वालियर में तोमर राज्य की स्थापना की।
- निर्मित चतुर्भुज मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, जीत महल, जैत या जीत स्तंभ और मंदर किला
 - कीर्तिपाल के शासन काल में बहलोल लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया।
- राजा मानसिंह तोमर वंश का सबसे शक्तिशाली राजा था।
- राजा मानसिंह को अपने शासनकाल में बहलोल लोदी, सिकंदर लोदी और इब्राहिम लोदी के आक्रमणों का सामना करना पड़ा था।
- 1517 ई. में, इब्राहिम लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया और ग्वालियर का किला जीता, इस युद्ध में राजा मानसिंह की मृत्यु हो गई।
- राजा मानसिंह द्वारा अपने शासनकाल में बनवाया गया मान मंदिर और गुजरी महल इसके बेहतरीन उदाहरण हैं।
- मान सिंह के पुत्र विक्रमादित्य तोमर वंश के अंतिम शासक थे।
- पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी के साथ विक्रमादित्य मारा गया था।
- इस प्रकार ग्वालियर राज्य के तोमर वंश का अंत हो गया।

- **कोहिनूर** नाम का विश्व प्रसिद्ध **हीरा** जो वर्तमान में **इंग्लैंड के महल** को सुशोभित करता है, ग्वालियर के तोमर वंश का खजाना है।
- यह तोमर **जागीरदार अजीत सिंह** द्वारा **विक्रमादित्य** के बाद **मुगल वंश** को **आगरा किले** और खुद पर **हमला** न करने की शर्त के रूप में दिया गया था।

मध्य प्रदेश के प्रमुख राजवंश और उनके क्षेत्र

| राजवंश | क्षेत्र | राजवंश | क्षेत्र |
|----------------|----------------------------------|------------------|------------------------|
| चंदेल राजवंश | बुंदेलखंड | नागवंश | विदिशा - ग्वालियर |
| तोमर राजवंश | ग्वालियर | बोधि राजवंश | जबलपुर (त्रिपुरी/तेवर) |
| परमार राजवंश | मालवा (धार) | माघ राजवंश | बघेलखंड |
| बुंदेल राजवंश | बुंदेलखंड | अमीर राजवंश | अहिश्वश (विदिशा/झाँसी) |
| होल्कर राजवंश | मालवा (इंदौर) | वाकाटक वंश | विंध्य प्रदेश |
| सिंधिया राजवंश | ग्वालियर | औलिकर राजवंश | दासपुर (मंदसौर) |
| करुश राजवंश | बघेलखंड | मौखरी वंश | मालवा (दासपुर, मंदसौर) |
| चंद्र राजवंश | बघेलखंड से बुंदेलखंड | परिव्राजक राजवंश | बुंदेलखंड |
| यादव वंश | चंबल बेतवा की नदियों का मध्य भाग | शैल राजवंश | महाकौशल |
| शुंग राजवंश | विदिशा | पांड्य राजवंश | मैकाल प्रदेश (अमरकंटक) |

चंदेल राजवंश

- **राजधानी: खजुराहो**
- स्थापना: 871
- **चंद्रोदय ऋषि** के वंशज
- पहला राजा: **ननुक**
- ननुक के पोते **जयसिंह** के नाम पर इसका नाम **जेजाकभुक्ति** रखा गया।
- **हर्षदेव** चंदेल वंश के पहले **महत्त्वपूर्ण राजा** थे, जिनके शासन काल में चंदेल वंश को **उत्तर भारत के शक्तिशाली राजवंशों** में गिना जाता था।
- हर्षदेव (905 से 925) के बाद उनका पुत्र **यशोवर्मन** गद्दी पर बैठा, जिसने **कन्नौज के प्रतिहारों को** समाप्त कर **राष्ट्रकूट से कालिंजर** का किला जीत लिया।
- यशोवर्मन (लक्ष्मणवर्मन) ने **खजुराहो के प्रसिद्ध विष्णु मंदिर** का निर्माण कराया।

धंग देव (950 से 1007)

- **प्रतिहार शक्ति** के कमजोर होते ही इसने एक स्वतंत्र राज्य की घोषणा कर दी। **धंगदेव** ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- उसका राज्य **कालिंजर से मालव नदी (बेतवा)**, मालव नदी से **कालिंदी**, कालिंदी से **चेदि** और चेदि से **गोपरादी (ग्वालियर)** तक था।
- इसने शुरू में **कालिंजर को** अपनी राजधानी बनाया, फिर **खजुराहो को** अपनी राजधानी बनाया।
- इसने **भटिंडा के शाही शासक जयपाल को सुबुक्तगीन के खिलाफ** सैन्य सहायता भेजी।
- **धंग** ने **खजुराहो के अधिकांश मंदिरों का** निर्माण कराया, इसने **जैन समुदाय** के लोगों को खजुराहो में मंदिर बनाने की अनुमति भी दी।
- **खजुराहो में दो प्रमुख - पारसनाथ और विश्वनाथ मंदिर** हैं।
- उनके शासनकाल के दौरान, **राजा धंग** द्वारा खजुराहो में **जगदंबी नामक वैष्णव मंदिर** और **चित्रगुप्त नामक सूर्य मंदिर** का निर्माण किया गया था।
- उन्होंने प्रयाग में **गंगा-यमुना के पवित्र संगम में** अपना शरीर त्याग दिया।

विद्याधर (1017 से 1029 ई.)

- **महमूद गजनी की** महत्वाकांक्षाओं का सफलतापूर्वक विरोध किया।
- **परमार शासक भोज** और **त्रिपुरी कलचुरी शासक गंगदेव** भी पराजित हुए।
- **विद्याधर के बाद** उसका पुत्र **विजयपाल** गद्दी पर बैठा, लेकिन बाद में उसे **गंगदेव की अधीनता** स्वीकार करनी पड़ी।
- इस वंश का **अंतिम शासक परमारदेव** (1165 ई. से 1203 ई.) (परमल) था।
- उन्होंने **दशैन दहपति** की उपाधि धारण की
- उन्हें 1182 ई. में **पृथ्वीराज चौहान** और 1203 ई. में **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने हराया था।
- **कालिंजर के युद्ध में परमारदेव की मृत्यु** हो गई।
- **आल्हा और उदल परमारदेव के दरबारी** थे।

2 CHAPTER

13-15वीं शताब्दी के दौरान मध्य प्रदेश

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

- 1019 ई. में, ग्वालियर पर महमूद गजनवी द्वारा अधिकार कर लिया गया।
- 1195 ई. में मोहम्मद गौरी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया।
- 1231 ई. में इल्तुतमिश ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया।

बुंदेलखंड अभियान

- मध्य प्रदेश में गौरी के शासनकाल के दौरान कुतुबुद्दीन ऐबक ने बुंदेलखंड पर विजय प्राप्त की।
- उसने चंदेल शासक परमर्दिदेव को हराया और कालिंजर, महोबा और खजुराहो पर अधिकार कर लिया।
- 1202 ई. में, ऐबक ने चंदेल के अधीन एक शक्तिशाली स्थान कालिंजर के किले की घेराबंदी की।
- परमर्दिदेव ने कुछ समय तक इसका विरोध किया, लेकिन उन्हें कुछ पैसे और हाथियों सहित किले के सामने आत्मसमर्पण करना पड़ा। लेकिन संधि की शर्तें पूरी होने से पहले ही परमर्दिदेव की मृत्यु हो गई।
- चंदेल के नए शासक अजयपाल के द्वारा अपने शासन की स्थापना के बावजूद तुर्कों का आक्रमण जारी रहा, लेकिन सूखे के कारण किले के सभी जल स्रोत सूख गए। इस कारण अजयपाल की सेना को बिना शर्त आत्मसमर्पण करना पड़ा।
- इस तरह चंदेल साम्राज्य ने लंबे शासनकाल के बाद अपने अस्तित्व को खो दिया।
- कुतुबुद्दीन ने कालिंजर का किला हसन अर्नाल को सौंप दिया।

मालवा अभियान

- मालवा में कुतुबुद्दीन ऐबक का पहला आक्रमण उज्जैन पर हुआ था।
- 1196-1197 ई. में ऐबक ने उज्जैन को लूटा, लेकिन यह जीत भी स्थायी साबित नहीं हुई।
- 1210 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद, आराम शाह शासक बने, इस दौरान हिंदुओं ने अपनी सत्ता वापस प्राप्त कर ली थी।
- 1231 ई. में, इल्तुतमिश ने ग्वालियर को घेर लिया, प्रतिहार शासक मलयबर्मन ने लगातार लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई में 11 महीने तक लम्बी घेराबंदी चली।
- अंत में प्रतिहार शासक मलयबर्मन की हार हुई, किले की महिलाओं ने तालाब के पास जौहर कर लिया। इस तालाब को जौहर ताल के नाम से जाना जाता है।

इल्तुतमिश

- ग्वालियर विजय के दो वर्ष बाद मलिक नुसरत उद्दीन तैयती को ग्वालियर किले का मुखिया बनाया गया।
- इस प्रकार गुना-चंदेरी का क्षेत्र इल्तुतमिश के कब्जे में चला गया।
- इल्तुतमिश ने कालिंजर जीतने के लिए बयाना और ग्वालियर के राज्यपाल मलिक तैयती को सेना के साथ रवाना किया।
- चंदेल राजा त्रिलोक्यवर्मन तुर्की सेना का मुकाबला नहीं कर सके और कालिंजर को छोड़कर भाग गए।
- 1234 ई. में, इल्तुतमिश ने अपने मालवा अभियान के दौरान भेलसा पर हमला किया और उसे नष्ट कर दिया।
- भेलसा पर कब्जा करने के बाद, वह उज्जैन की ओर चला गया, इस समय मालवा में देवपाल परमार शासन कर रहा था।
- तबकात-ए-नासिरी के लेखक मिन्हाज-उस-सिराज लिखते हैं कि इल्तुतमिश ने विक्रमादित्य की मूर्ति और महाकाल के शिवलिंग को दिल्ली में लूटा था, जिसकी पुष्टि बाद में फरिश्ता ने अपनी पुस्तक में की थी।

बलबन का कालिंजर अभियान

- 1251 ई. में, बलबन ने उद्दु खान के नेतृत्व में कालिंजर पर हमला किया।
- नवंबर 1251 ई. में ही बलबन ने चंदेरी के राजा ज़हार्देव या ज़हरदेव और मालवा के एक शक्तिशाली शासक नरवर पर हमला किया था।

- 1251 ई. में, बलबन ने नसीरुद्दीन के शासनकाल के दौरान ग्वालियर पर आक्रमण किया, लेकिन अपनी शक्ति को बनाए रखने में सक्षम नहीं रहा।

मध्य प्रदेश में अलाउद्दीन खिलजी का अभियान

- अलाउद्दीन ने सुल्तान जलालुद्दीन से चंदेरी और विदिशा (भीलसा) पर हमला करने की अनुमति माँगी।
- 1292 ई. में चंदेरी पर अधिकार कर लिया और फिर भीलसा पर आक्रमण किया।
- अलाउद्दीन ने 1234 ई. में देवगिरि के लिए अभियान चलाया, जिसके लिए वह मालवा होते हुए निकला। देवगिरि के अभियान से लौटते समय उसने खानदेश पर भी आक्रमण किया। उस समय खानदेश एक सरदार के अधीन था जो खानदेश का राजा कहलाता था और संभवतः वह असीरगढ़, रावेहंड का चौहान शासक था, ऐसा भी माना जाता है कि उसके पास 40 से 50 हजार की सेना थी।
- रावचंद और उनके पूरे परिवार को सिवाय उनके एक बेटे को छोड़कर सभी को मौत के घाट उतार दिया गया।
- 1305 ई. में, अलाउद्दीन ने आइन-उल मुल्क के नेतृत्व में मालवा पर हमला करने के लिए 10,000 सैनिकों की एक विशाल सेना भेजी।
- तुर्की सेना और परमार कमांडर हरमंद कोका के बीच एक भीषण संघर्ष में, कोका मारा गया और तुर्कों की विजय हुई।
- कोका के सिर को दिल्ली भिजवाया गया, जहाँ उसे महल के दरवाजों के नीचे घोड़े के पैरों से कुचल दिया गया।
- 23 नवंबर 1305 ई. को अलाउद्दीन की सेना ने मांडू पर कब्जा कर लिया।
- मांडू के पतन के बाद, उज्जैन, धार, चंदेरी, शाजापुर, सारंगपुर, मंदसौर, रतलाम आदि के आस-पास के सभी क्षेत्र दिल्ली सल्तनत के नियंत्रण में आ गए।
- इसके बाद अलाउद्दीन ने मंदसौर शहर के पूर्व में एक किले की नींव भी रखी थी।
- आइन-उल-मुल्क को मालवा का इक्तादार नियुक्त किया गया और इस क्षेत्र को धार और उज्जैन प्रांत के रूप में नामित किया गया।
- इस प्रकार मालवा का क्षेत्र दिल्ली सल्तनत के अधीन आ गया और अलाउद्दीन के दक्षिणी अभियानों की सफलता में कामयाब साबित हुआ।
- 1310 ई. में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति ने देवगिरि के अभियान से लौटते हुए धार में निवास किया। दिल्ली से निकटता के कारण, ग्वालियर खिलजी के नियंत्रण में रहा।

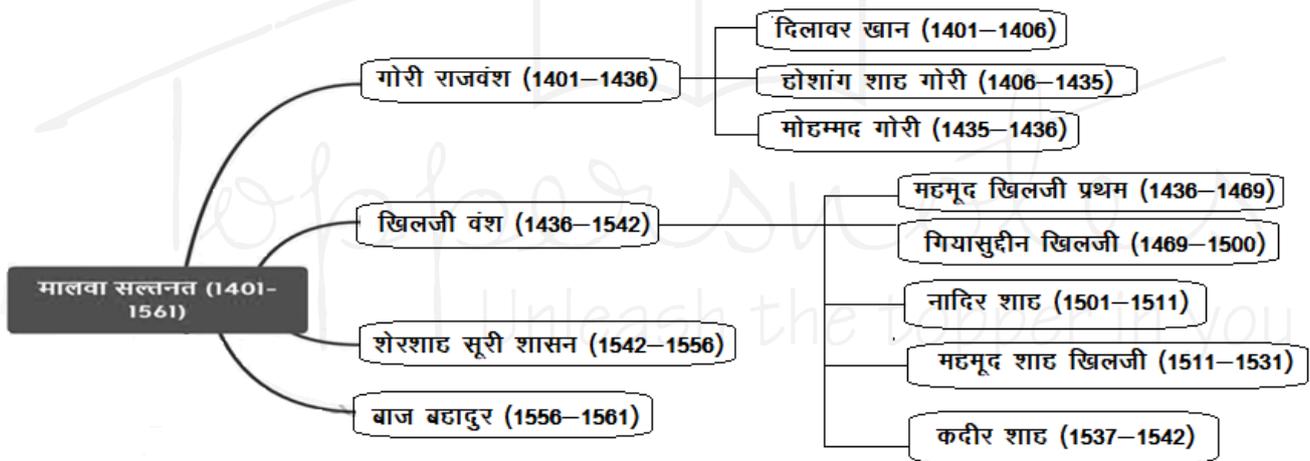
मध्य प्रदेश में तुगलक

- दमोह शिलालेख इस बात की पुष्टि करता है कि तुगलक काल के दौरान विशेष रूप से गयासुद्दीन और मोहम्मद तुगलक के समय में इस क्षेत्र पर मुस्लिम प्रभुत्व मजबूत रहा था। वर्ष 1324 ई. के बटियागढ़ अभिलेख (दमोह) से स्पष्ट है कि गयासुद्दीन तुगलक किस काल में इस क्षेत्र में कार्यरत था।
- बुंदेलखंड में खजुराहो, दमोह, छतरपुर आदि क्षेत्र दिल्ली सल्तनत का हिस्सा रहे इब्रबतूता पुष्टि करते हैं कि ग्वालियर, चंदेरी, नरवर उस अवधि के दौरान सल्तनत का हिस्सा बने रहे।
- सुल्तान गयासुद्दीन के बाद मालवा में आइन-उल-मुल्क को उसी पद पर रखा गया।
- बाद में, आइन-उल-मुल्क को मालवा से अवध प्रांत में स्थानांतरित कर दिया गया और कुतलग खान को देवगिरि के साथ-साथ मालवा की कमान दी गई।
- मोहम्मद तुगलक के समय में जोलिक खान को चंदेरी का प्रशासक बनाया गया था।
- 1335 से 1336 ई. में मालवा में भीषण अकाल पड़ा। सुल्तान मोहम्मद ने उस समय देवगिरि से लौटते हुए मालवा में विश्राम किया था।
- आइन-उल-मुल्क मुल्तानी और उनके भाइयों ने अवध मालवा से पैसे और कपड़े भेजकर अकाल पीड़ित लोगों की मदद की।
- अजीज खम्मर की नियुक्ति मालवा में 1344 से 1345 ई. में हुई थी।
- अजीज खम्मर के मालवा में कार्यभार संभालने के बाद, अमीर-ए-सदा को मालवा के 100 गाँवों के राजस्व संग्रह के लिए बारीकी से निगरानी और नियंत्रण करने के लिए राजस्व अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया।
- अजीज खम्मर ने धार के अमीर-ए-सदा को कैद कर मौत की सजा सुनाई थी।
- इसने अन्य अधिकारियों को आत्मरक्षा के लिए विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया, इस घटना के जवाब में, 1346 ई. में गुजरात के अमीर-ए-सदा ने अजीज खम्मर को चुनौती दी और उसे युद्ध में मार डाला।

फिरोज शाह तुगलक

- निजामुद्दीन को मालवा में 1351 ई. में नियुक्त किया गया था, मालवा के अलावा **बुंदेलखंड का क्षेत्र** भी फिरोज शाह तुगलक के पास था, क्योंकि इसकी पुष्टि 1383 ई. के **फारसी शिलालेख** में **दमोह** क्षेत्र में **तुगलक शासक** की शक्ति से होती है।
- **देव वर्मा** फिरोज शाह तुगलक के समय **चंबल क्षेत्र के शासक** थे।
- 1353 ई. में **तिरहुत अभियान** के बाद, उन्होंने **देव वर्मा को जागीर** दी और उन्हें **राय की उपाधि** दी।
- 1375 ई. में देव वर्मा की मृत्यु हो गई।
- उनके **उत्तराधिकारी वीर सिंह देव** ने **ग्वालियर पर कब्जा** कर लिया और एक **स्वतंत्र शासक** बन गए।
- **फिरोज तुगलक** के समय में **चंदेरी, एरण और दतिया** के आस-पास का क्षेत्र **दिल्ली सल्तनत** के अधीन था।
- उल्लेखनीय है कि **मालवा के सुल्तानों ने बुंदेलखंड के सागर-दमोह** क्षेत्र पर भी कब्जा कर लिया था।
- **महमूद शाह** 1436 ई. में **मालवा की गद्दी** पर बैठा और मालवा के अन्य सुल्तानों ने समय-समय पर **दमोह जिले** के क्षेत्र पर शासन किया।
- उनके शासन काल में **स्थानीय प्राधिकरण का मुख्यालय बटोहागढ़ से दमोह में स्थानांतरित** कर दिया गया था।
- दमोह में मिले **1480 ई. के फारसी शिलालेख** से पता चलता है कि उस समय **गयासुद्दीन** सत्ता में था, वह **मालवा का गयासुद्दीन खिलजी** था।
- इसी प्रकार **दमोह जिले में 1505 ई. का एक सती अभिलेख** प्राप्त हुआ जिसमें **गयासुद्दीन के पुत्र नसीरुद्दीन** का उल्लेख है।
- 1512 ई. के एक अन्य शिलालेख में **नसीरुद्दीन के पुत्र महमूद शाह द्वितीय** का उल्लेख है।
- **1531 ई. में महमूद द्वितीय की मृत्यु** हो गई और दमोह क्षेत्र में **मालवा सुल्तानों का शासन समाप्त** हो गया।

मालवा सल्तनत (1401-1561)



- **दिलावर खान गौरी** वास्तविक नाम - **हुसैन खान** या **अमीन खान** द्वारा **मालवा में गौरी राजवंश** की स्थापना के साथ ही अन्धकार युग की समाप्ति हुई। **सुल्तान मोहम्मद शाह तुगलक** ने **दिलावर खान गौरी** को 1390 ई. में **मालवा का सूबेदार** नियुक्त किया। **फिरोज शाह तुगलक** ने उसका नाम **दिलावर खान** रखा।
- **1401 ई. में दिलावर खान** ने स्वतंत्र **मालवा राजवंश** की स्थापना की।

दिलावर खान (1401 से 1406 ई.)

- **दिलावर खान** ने उत्तर में **मालवा के रास्ते से चंदेरी** पर अधिकार करने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका।
- उसने **धार और मांडू** में दो मस्जिदों का निर्माण करवाया।
- इसके बेटे **अल्प खान** ने **शादियाबाद (मांडू दुर्ग)** को अपने शासन का **मुख्य केंद्र** बनाया।

होशंग शाह गौरी (1406-1435 ई.)

- **दिलावर खान गौरी** का ज्येष्ठ पुत्र **अल्प खान** 1406 ई. में **होशंग शाह** की उपाधि के साथ गद्दी पर बैठा।
- **होशंग शाह** ने **मांडू** को अपनी राजधानी बनाया।
- **गुजरात के सुल्तान अहमद शाह** ने **1418 ई. में उज्जैन** और **1422 ई. में महेश्वर** पर हमला किया।

- उसने होशंगाबाद शहर की स्थापना की और एक किले का निर्माण करवाया।
- अपने पुत्र गनी खान को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।
- होशंग शाह ने मांडू में जहाज पैलेस तथा हिंडोला महल का निर्माण करवाया।
- वह मालवा का पहला सुल्तान था जिसने शुद्ध सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के प्रचलन में लाये।

मोहम्मद शाह गौरी (1435-1436 ई.)

- गजनी खान सुल्तान मोहम्मद शाह गौरी के नाम से गद्दी पर बैठा।
- होशंग शाह गौरी ने महमूद को उसकी योग्यता देखकर 16 वर्ष की आयु में रेवान की उपाधि दी।
- शुरू में उसने अपने पिता की तरह अच्छा शासन किया, लेकिन बाद में राज्य की सारी शक्ति महमूद खान को सौंप दी और स्वयं विलासिता में डूबा रहा।
- मौका देखकर महमूद खान ने उसे मार डाला और स्वयं गद्दी पर बैठ गया, इस प्रकार मालवा में खिलजी वंश की स्थापना हुई।

खिलजी वंश (1436-1531 ई.)

महमूद खिलजी (1436-69 ई.)

- 14 मई 1436 ई. को महमूद मांडू का सुल्तान बना और उसके नाम पर खुल्बा पढ़ा गया और सिक्के जारी किए गए।
- उसने अपने विशेष अमीर मुशहरूल मुल्क को वज़ीर नियुक्त किया।
- इसने अपने पिता मलिक मुथिक को आजम हुमायूँ की उपाधि से नवाजा।

मेवाड़ के साथ संबंध

- सुल्तान होशंग शाह गौरी ने मेवाड़ पर अधिकार करने के लिए मंदसौर किले का निर्माण करवाया था।
- उसने हाड़ौती क्षेत्र के गागरोन पर कब्जा करके वहाँ मालवा की सेना को नियुक्त किया। सुल्तान ने गागरोन किले का नाम बदलकर मुस्तफाबाद नाम रखा।
- मेवाड़ के राणा कुम्भा ने होशंग शाह के पुत्र उस्मान खान को शरण दी तथा उसे चंदेरी में शासक बनाने का प्रयास किया।
- इससे क्रोधित होकर सुल्तान ने 1442 ई. में चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया।
- इस युद्ध में विजय प्राप्ति के अवसर पर राणा कुम्भा ने चित्तौड़ में विजय स्तम्भ बनवाया।
- उनके कोषाध्यक्ष संग्राम सिंह सोनी थे, जिन्हें अब्दुल-उल-मुल्क की उपाधि दी गई थी। संग्राम सिंह ने बुद्धि सागर नामक एक जैन ग्रंथ की रचना की थी।
- खरीफ और रबी फसल के कर संग्रह के लिए महमूद ने चंद्रमा आधारित पंचांग जारी किया।
- उन्होंने जौनपुर के प्रसिद्ध इतिहासकार शिहाब हाकिम को मालवा के इतिहास को "माथीरे महमूद शाही" के रूप में लिखने के लिए आमंत्रित किया।
- जैन कल्पसूत्र ने महमूद शाह के संरक्षण में "चित्रकला की पोथी" चित्रित की।
- सुल्तान के कार्य से प्रभावित होकर मिस्र के अब्बासी खलीफा ने 1466 ई. में दरबार में राजदूत भेजकर सुल्तान को सम्मानित किया।
- सुल्तान ने मांडू में होशंग शाह का मकबरा, जामा मस्जिद, गागरोन में मुस्तफाबाद शहर, चंदेरी में कुशक महल तथा इसी प्रकार से उज्जैन और देपालपुर में कई शहरों की स्थापना की।

गियाथ शाह (गयासुद्दीन खिलजी) (1469 से 1500 ई.)

- सुल्तान महमूद खिलजी के बड़े बेटे, गयासुद्दीन ने 3 जून 1469 ई. को अपने पिता की मृत्यु के बाद सिंहासन संभाला।
- इन्होंने आस-पास के राज्यों में शांति स्थापित करने की कोशिश की और युद्ध त्याग दिया।
- अपने समय के दौरान गुजरात के सुल्तान महमूद बेगड़ा ने गुजरात के चंपानेर किले पर हमला करके उस पर कब्जा कर लिया। कुछ समय बाद, उनके राज्य की जिम्मेदारी उनके बेटे नसीरुद्दीन को सौंप दी गई और उन्होंने हरम में समय बिताया।
- उनके दो पुत्र नसीरुद्दीन और अलाउद्दीन के बीच गद्दी के लिए संघर्ष था, लेकिन नसीरुद्दीन ने अपने भाई अलाउद्दीन और अपनी माँ, रानी खुर्शीद को कैद करके मार डाला।
- 29 मार्च 1501 ई. को गयासुद्दीन की मृत्यु हो गई, लेकिन इससे पहले उसने अपने बेटे नसीरुद्दीन को गद्दी पर बिठाया था।

नासिर शाह (1501-1511 ई.)

- नसीरुद्दीन अपने पिता के जीवनकाल में मालवा की गद्दी पर बैठा था।
- सुल्तान ने अपने छोटे बेटे आजम हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया तथा उसे महमूद शाह की उपाधि दी।

- इन्होंने सिपरी (शिवपुरी) में एक विशाल दरबार का आयोजन किया और अपने बेटे को अपना सिंहासन सौंपने की घोषणा की।
- जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा तुजुक -ए-जहाँगीरी में उज्जैन के पास कालियादेह नामक महल में अपनी हरम की महिलाओं के साथ नहाते हुए उसकी डूबकर मौत होने की जानकारी लिखी है।

महमूद शाह खिलजी द्वितीय (1511-1531 ई.)

- उसी समय, मुहाफ़िज़ खान के नेतृत्व में मुस्लिम सरदारों ने एक दूसरी पार्टी बनाई और शहाबुद्दीन के बेटे होशंग शाह को सुल्तान घोषित किया।
 - महमूद ने मांडू से उज्जैन की तरफ प्रस्थान किया।
- मेदिनी राय का उदय**
- उस समय, रायचंद पुरबिया (जिसे बाद में मेदिनी राय के नाम से जाना गया) ने महमूद की मदद की और उसे मांडू के सिंहासन पर बैठाया, इसके बदले में मेदिनी राय ने चंदेरी प्राप्त की।

गुजरात के नियंत्रण में मालवा

- 28 मार्च, 1531 ई. को बहादुर शाह ने मालवा पर हमला किया और महमूद को गिरफ्तार कर उसे चंपानेर के किले में भेज दिया।
- इस प्रकार मालवा की स्वतंत्र सल्तनत का अंत हो गया।
- भीलसा से रायसेन तक उस समय राजपूत राजा सिल्हदी का शासन था।
- बाबर द्वारा चंदेरी की विजय और मेदिनी राय की मृत्यु के बाद राजा सिल्हदी मालवा में सबसे शक्तिशाली राजपूत शासक रहा।
- गुजरात के बहादुर शाह ने जनवरी 1532 ई. में रायसेन के किले पर आक्रमण किया।
- राजा सिल्हदी ने ताज खान तथा सैनिकों के बहुत बड़े समूह के साथ गुजरात की सेना के साथ युद्ध किया और वीरगति प्राप्त की।
- 1532 ई. में रायसेन पर गुजरात ने अधिकार कर लिया।

मालवा पर मुगल आक्रमण (1535 ई.)

हुमायूँ द्वारा मालवा पर मुगल आक्रमण का कारण

- गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह की बढ़ती शक्ति।
- बहादुर शाह द्वारा विद्रोही मुगल सरदार मोहम्मद जमान मिर्जा को आश्रय देना।
- बहादुर शाह द्वारा हुमायूँ को एक प्रस्ताव भेजा गया तथा उसमें कहा कि वह मालवा को उसे सौंप देगा और बदले में उसे गुजरात का प्रशासन करने देगा।
- हुमायूँ ने जून 1535 ई. में मालवा पर कब्जा किया तथा चंपानेर पर हमला करते हुए बहादुर शाह को हराया और अपने भाई अस्करी के पास फिर से गुजरात लौट आया।
- मल्लू खान और सिकंदर खान ने उज्जैन सहित मालवा में कई जगहों पर कब्जा कर लिया था।
- अस्करी और हुमायूँ मालवा छोड़कर आगरा चले गए।

मल्लू खान उर्फ कादिर खान (1537 से 1542 ई.)

- हुमायूँ के जाने के बाद बहादुर शाह ने मालवा में मल्लू खान को सूबेदार नियुक्त किया। 1537 में बहादुर शाह की मृत्यु के बाद, उसके उत्तराधिकारी महमूद शाह ने मल्लू खान को मांडू में कादिर शाह की उपाधि दी तथा स्वयं मालवा का सुल्तान बन गया।
- राजा सिल्हदी के पुत्रों पूरणमल और भूपत को रायसेन का किला दिया गया।

शेरशाह की रायसेन विजय (1543 ई.)

- मार्च 1543 ई. में शेरशाह सूरी ने रायसेन पर आक्रमण कर उसे घेर लिया।
- रायसेन की घेराबंदी शेरशाह द्वारा 4 महीने तक चली, लेकिन वह किला नहीं जीत सका।
- अन्त में शेरशाह ने पूरणमल से सन्धि की, परन्तु शेरशाह ने विश्वासघाती रूप से किले पर आक्रमण कर दिया।
- अंत में युद्ध में पूरणमल और उसके सैनिकों ने भयंकर युद्ध लड़ा तथा इस युद्ध में महिलाओं और बच्चों ने काफी संख्या में जौहर किया।
- शेरशाह ने शुजात खान को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया तथा स्वयं वापस दिल्ली आ गया।
- 22 मई 1645 ई. को कालिंजर किले में शेरशाह की मृत्यु हो गई।
- 1556 ई. में शुजात खान मालवा में स्वतंत्र शासक बना।

बाज बहादुर (1556 - 1561 ई.)

- 1556 में शुजात खान की मृत्यु हो गई तथा शुजात खान के बड़े बेटे मियां बेजिद खान ने “ बाज बहादुर” की उपाधि धारण की तथा मालवा का सुल्तान बना।
- इसने पूर्व में गडा की रानी दुर्गावती पर हमला किया, लेकिन यह स्वयं ही इस हमले में परास्त हुआ।
- युद्ध हारने के बाद रानी रूपमती के साथ संगीत में खो गया। इसने राग मालवी और राग गुजरी जैसे कई रागों की खोज की।

मुगल आधिपत्य (1561-62 ई.)

- 1561 ई. में अकबर ने आदम खाँ के नेतृत्व में मालवा पर विजय प्राप्त करने के लिए एक सेना भेजी।
- आदम खाँ ने मालवा और सहारनपुर में घोर अत्याचार किए और रानी रूपमती ने इन अत्याचारों से अपनी रक्षा के लिए विष खा लिया।
- धार किला: इसे मोहम्मद तुगलक ने 1325 ई. से 1340 ई. के बीच बनवाया था।
- कमाल मौला मस्जिद, लाट मस्जिद - धार, दिलावर की मस्जिद, मलिक मुगीस की मस्जिद -मांडू, शादियाबाद (मांडू), ये सभी ऐतिहासिक स्थल होशंगशाह द्वारा बनवाये गये थे।
- इनके उत्तरी द्वार को दिल्ली दरवाजा कहा जाता है। जामा मस्जिद मांडू की सबसे अच्छी इमारत है। इसका निर्माण होशंग शाह के समय शुरू हुआ था, जिसे महमूद खिलजी ने पूरा किया था।
- होशंगशाह का मकबरा- यह मांडू की दूसरी सबसे प्रसिद्ध इमारत है। इसे महमूद खिलजी प्रथम ने बनवाया था, यह उस समय का भारत का पहला मकबरा था, जो पूरी तरह से सफेद संगमरमर का बना हुआ था।
- अशरफी महल- यह महल कई इमारतों का समूह है, जो होशंगशाह के शासनकाल से महमूद खिलजी के समय तक बनाए गए थे।
- हिंडोला महल, दरबार हॉल और जहाज़ महल: ये आवासीय महल थे, इनका निर्माण होशंग शाह के समय में शुरू हुआ था और यह महमूद खिलजी के समय में बनकर तैयार हुए थे।
- बाज बहादुर और रूपमती का महल- इस इमारत का निर्माण 16वीं शताब्दी में सुल्तान बाज बहादुर ने करवाया था।
- अन्य प्रमुख इमारतें- नीलकंठ महल, चिश्ती खान का महल और गदाशाह का महल प्रमुख हैं।

फारूकी राजवंश (1398-1601 ई.)

- 15वीं और 16वीं शताब्दी में, खानदेश के फारूकी सुल्तानों ने मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग बुरहानपुर के क्षेत्र पर शासन किया।
- यहाँ स्थित असीरगढ़ के किले को दक्कन का प्रवेश द्वार कहा जाता है।
- खानदेश की राजधानी बुरहानपुर थी।
- आइन-ए-अकबरी के अनुसार 1601 ई. में खानदेश में 32 परगने थे।

फारूकी सल्तनत का उदय

- मलिक अहमद रज़ा दिल्ली के सुल्तान फ़िरोज़ तुगलक के समय थालनेर और करौदा के सूबेदार थे।
- तैमूर के हमले के समय, 1398 ई. में मलिक अहमद रजा ने खुद को दिल्ली सल्तनत से स्वतंत्र घोषित कर दिया।
- मलिक नासिर उसका उत्तराधिकारी बना।
- 1399 ई. में मलिक ने आसा अहीर को धोखा देकर असीरगढ़ का किला बनवाया।
- मलिक नासिर की सफलता के बाद उनके गुरु शेख ज़ैनुद्दीन बुरहानपुर आए।
- 1407 ई. में, जैनाबाद शहर को शेख ज़ैनुद्दीन की याद में ताप्ती नदी के तट पर स्थापित किया गया था और बुरहानपुर का नाम नदी के दूसरे किनारे पर दौलताबाद के संत बुरहानुद्दीन के नाम पर रखा गया था।

मीरन आदिल खान II

- इस समय, बुरहानपुर सोने और चाँदी के तार से बनी महीन वस्तुओं का निर्माण और व्यापार करता था। इस प्रकार बुरहानपुर व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।
- उसके दरबार में कुतुब मौलाना शाह बुखारी, कुतुब मौलाना-उल मारीफ, सैयद कमालुद्दीन, सैयद जलालुद्दीन जैसे विद्वान थे।
- 1561 ई. में, जब मुगल सेना ने आदम खान की कमान में मालवा के सुल्तान बाज बहादुर को हराया, तब यह बुरहानपुर के दरबार में गया और शरण ली।
- इसका पीछा करते हुए, मुगल सेनापति मोहम्मद शेरवान ने असीरगढ़ पर हमला किया और बुरहानपुर को बर्बाद कर दिया।

- 1564 ई. में, अकबर अपने विद्रोही अमीर अब्दुल्ला खान के विद्रोह को दबाने के लिए मालवा आया और खानदेश के पास बीजागढ़ (खरगोन के पास) पर अधिकार कर लिया।

फारूकी राजवंश (1398-1401 ई.) मुगलों के अधीन

- जुलाई-अगस्त 1591 ई. में अकबर ने खानदेश, अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा राज्यों को मुगल अधीनता स्वीकार करने के लिए एक संदेश भिजवाया।
- फैज़ी को खानदेश भेजा गया।
- बीजापुर, गोलकुंडा और अहमदनगर ने अधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया इससे क्रोधित होकर अकबर ने शहजादा मुराद को दक्कन अभियान में भेजा।
- राजा आदिल खान अकबर के प्रति वफादार थे, इसलिए उन्हें बहमनी राजाओं के खिलाफ युद्ध छेड़ना पड़ा।

अकबर का अधिकार

- फरवरी 1600 ई. में अकबर ने एक शक्तिशाली सेना के साथ असीरगढ़ पर हमला किया।
- असीरगढ़ की घेराबंदी महीनों तक चली, जिसमें मुगल बादशाह अकबर खुद बुरहानपुर में रहा करते थे।
- फरवरी 1601 ई. में अकबर ने असीरगढ़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- शहजादा दानियाल को खानदेश की जिम्मेदारी सौंपी गई और इसका नाम बदलकर दान देश कर दिया गया।

बुरहानपुर में सूफी परंपरा

हज़रत शाह भिकारी

- आदिल शाह के साम्राज्य में कुतुब मौलाना निजामुद्दीन और हज़रत शाह भिकारी बहुत प्रमुख थे।
- आदिल शाह उन्हें अपने सिंहासन के पास बैठाता था। इनकी दरगाह बुरहानपुर में उतावली नदी के किनारे स्थित है।

जहाँगीर का काल

- 1610 ई. में जहाँगीर ने अपने पुत्र शहजादा परवेज को खानदेश के शासक के रूप में बुरहानपुर भेजा।
- इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम के राजदूत सर टॉमस रो बुरहानपुर होते हुए आगरा गए।
- 1630 ई. से 1632 ई. तक शाहजहाँ बुरहानपुर में रहा और बीजापुर, अहमदनगर तथा गोलकुंडा के खिलाफ सैन्य गतिविधियों का संचालन किया।
- शाहजहाँ की प्यारी पत्नी मुमताज महल बेगम की मृत्यु 1631 ई. में बुरहानपुर में हुई थी।
- मुमताज महल बेगम को ताप्ती नदी के दूसरे किनारे पर दफनाया गया था और 6 महीने बाद अवशेषों को आगरा ले जाया गया और ताजमहल में फिर से दफनाया गया।

स्थान



गोंड साम्राज्य

- कलचुरी और चंदेल के पतन के बाद दो शताब्दियों तक यहाँ कोई विशेष केंद्रीय सत्ता नहीं थी।
- उसके बाद, 15वीं शताब्दी में गोंड राजाओं के अधीन राज्य का गठन हुआ, जो लगभग 275 वर्षों तक अस्तित्व में रहा।
- गोंड के शासन को गडा, गढ़ कटंगा (अकबरनामा) और गढ़ मण्डिया के नाम से जाना जाता था।
- जब गोंड राजा नरेंद्र शाह ने 1700 ई. के आस-पास राजधानी को रामनगर से मंडला स्थानांतरित किया, तो इसे गड़ा मंडला कहा जाने लगा।

प्राचीन राज्य

- मण्डिया के निकट रामनगर के संस्कृत अभिलेख के अनुसार "यादव रायर या जादू राय" प्रथम शासक थे। यादव राय से लेकर हृदय शाह तक 54 शासकों की सूची मिलती है। गढ़ा के राजा को पुलतस्य वंश का शासक माना जाता है।
- पुलतस्य रावण के पिता थे और गोंड खुद को रावणवंशी मानते थे।

संग्राम शाह (1510 से 1543 ई.)

- संग्राम शाह ने 1531 ई. में रायसेन की जीत के दौरान गुजरात के सुल्तान बहादुर की सहायता की।
- परिणामस्वरूप, बहादुर शाह ने अमान दास को "संग्राम शाह" की उपाधि दी। संग्राम शाह के दो बेटे थे- दलपतिशाह और चंद्रशाह।
- दलपति शाह का विवाह संग्रामशाह के समय 1542 ई. में दुर्गावती से हुआ था।
- दुर्गावती चंदेल राजा कीरत सिंह की बेटी थीं।
- संग्राम शाह के समय में सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के प्रचलन में थे। संग्राम शाह की मृत्यु 1541 ई. या 1543 ई. में हुई, उन्होंने चौरागढ़ (नरसिंहपुर) का किला बनवाया और सिंगोरगढ़ के किले के पास संग्रामपुर शहर (दमोह जिला) को बसाया।
- गढ़ा के पास "संग्राम सागर" नाम की एक झील और उसके किनारे बाजना मठ का निर्माण करवाया गया। संग्राम शाह ने रस रत्नमाला की रचना की तथा दामोदर ठाकुर उनके दरबार में थे, इन्होंने संग्राम साह विवेक दीपिका और दिव्य निर्णय नामक दो निबंध लिखे।

दलपति शाह

- संग्राम शाह के बाद उनका पुत्र दलपति शाह गद्दी पर बैठा।
- उन्होंने अपनी राजधानी को गढ़ा से सिंगोरगढ़ स्थानांतरित किया। 1550 ई. में उनकी मृत्यु के बाद, उनका पुत्र वीरनारायण अपनी माँ दुर्गावती के अधीन सम्राट बना।
- उन्होंने आधार सिंह कायस्थ को अपना दीवान नियुक्त किया।
- दुर्गावती ने अपनी राजधानी को सिंगोरगढ़ से चौरागढ़ स्थानांतरित कर दिया।
- रानी पर सबसे बड़ा हमला मालवा के सुल्तान बाज बहादुर ने किया था जिसे पराजित होना पड़ा।

अकबर के साथ युद्ध

- आसफ खान (अब्दुल मजीद) गढ़ा राज्य के उत्तर-पूर्व में कड़ा मानिकपुर में सूबेदार था।
- आसफ खान दमोह की सीमा पर पहुँच गया, लेकिन रानी की सेना गढ़ा के पश्चिम में घने जंगलों में चली गयी और नर्मदा तथा गौर नदी के बीच पहाड़ों में स्थित नराई नामक स्थान पर डेरा डाला।
- मुगलों से लड़ने के लिए रानी खुद हाथी पर बैठकर युद्ध के मैदान में उतर गयी। प्रारंभिक लड़ाइयों में, रानी ने आसफ खान को हराया।
- आसफ खान ने रानी के पुत्र विरसा (वीर नारायण)से भी युद्ध किया।
- लेकिन फिर भी वह वीरता से लड़ती रही, लेकिन जब मुगल सेना ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया, तो उन्होंने अपने महावत से एक खंजर लेकर खुद पर वार किया और वीरगति को प्राप्त हुई।
- वल्लभ संप्रदाय के गुसाई विठ्ठलदास लंबे समय तक रानी के दरबार में रहे और रानी ने उनसे दीक्षा प्राप्त की और 108 गाँव दान में दिए।

चंद्र शाह और मधुकर शाह

- आसफ खान के लौटने के बाद, दलपति शाह के भाई चंद्र शाह को गढ़ा के शासक के रूप में नियुक्त किया गया और उन्होंने इसके बदले में अकबर को 10 गढ़ सौंपे, जिनमें से रायसेन, कुरवाई, भोपाल, राहतगढ़ और मकडाई प्रमुख थे।
- चन्द्र शाह की हत्या के बाद उसका छोटा पुत्र मधुकर शाह शासक बना।

प्रेम शाह (प्रेम नारायण)(1586 ई.)

- मधुकर शाह के बाद प्रेम शाह गढ़ा का राजा बना।
- जहाँगीर ने उन्हें 1000 का मनसब प्रदान किया और एक बड़ी जायदाद भी दी।
- राधावल्लभ संप्रदाय के संत "चतुर्भुज दास" ने गढ़ा में राधावल्लभ संप्रदाय का बहुत विकास किया।

हृदय शाह

- हृदय शाह को प्रेम शाह का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- इन्होंने नए शहर की स्थापना की और राजधानी को मंडला के पास रामनगर में स्थानांतरित किया

- उसी समय (1667 ई.) में रामनगर का शिलालेख लिखा गया।
- 18वीं शताब्दी में, राज्य मराठों के अधीन आ गया और गड़ा राजा ने मराठों से पेंशन प्राप्त की अंत में जबलपुर के पास पूर्वा और कौगावा क्षेत्र ही गड़ा राज्यों के अधीन रह गए, जिन पर कुछ समय तक रघुनाथ शाह और शंकर शाह का शासन रहा, लेकिन 1857 की क्रांति के दौरान अंग्रेजों ने उन्हें हड़प लिया।

बघेलखंड राजवंश

- प्राचीन धार्मिक स्थल अमरकंटक भी उसी क्षेत्र में स्थित है, जहाँ से नर्मदा का उद्गम होता है।
- पुराणों में नर्मदा को रीवा कहा गया है और इस क्षेत्र को रीवा खंड कहा गया है।
- जिसके बाद रीवा शहर बन गया, बघेल राजा विक्रमजीत ने इसे अपनी राजधानी बनाया।
- बघेलखंड के अंतर्गत मध्य भारत के रीवा, मेहर, नागौद, सोहवाल, कोठी, जसो, बरौधा जैसे क्षेत्र शामिल थे।

मध्यकालीन बघेलखंड 13वीं शताब्दी से 1809 ई. तक

- बघेल सत्ता की स्थापना।
- तुर्कों के हमले से चंदेल और कलचुरी की शक्ति कमजोर हो गई थी, जिसके परिणामस्वरूप वहाँ भर, गोंड, सेंगर और अन्य छोटी जातियों ने अपना ठिकाना बना लिया था।
- गुजरात के दो बघेल भाइयों, बिसलदेव और विमल देव ने बघेल साम्राज्य की स्थापना की।
- बघेल मूल रूप से चालुक्य थे।
- बघेलबाड़ी गाँव में रहने के कारण अर्नोराज के वंशज बघेल कहलाए। इस प्रकार 1236 ई. में गहोरा में बघेल सत्ता की स्थापना हुई।

बघेल सत्ता का विस्तार

- विमल देव के पुत्र अनिक देव ने राजधानी गहोरा में बड़े-बड़े भवनों का निर्माण करवाया था। विमल देव के बाद सम्पूर्ण कलिनिगर राणिगदेव राजा के आधिपत्य से मुक्त हो गया।

बल्लार देव (1353 - 1390 ई.)

- फीफ खान ने " तारीख-ए-फिरोजशाही " में इटावा के राय सुमेर चौहान तथा बल्लार देव को फिरोजशाह तुगलक के दरबार में प्रभावशाली राजा बताया।
- बल्लार देव ने भी दिल्ली सल्तनत की नाजुक स्थिति का फायदा उठाया और स्वतंत्र राजा के रूप में महाराजाधिराज की उपाधि धारण की और तुर्कों से युद्ध किया।
- बल्लार देव के पुत्र सिंह देव ने त्रिवेणी में जल समाधि ली।
- वीरमदेव ने दिल्ली सल्तनत के तहत सेहुदा नामक शहर पर विजय प्राप्त की और दिल्ली सुल्तान को बंदी बना लिया।
- तारिखे मोहम्मदी में इसे निरम (ईरानी पहलवान) की उपाधि दी गई थी।
- सुल्तान इब्राहिम शर्की की वीरमदेव बघेल के साथ घनिष्ठ मित्रता थी और इस प्रकार दोनों ने कालपी पर अधिकार करने की योजना बनाई।

बघेल लोदी संघर्ष

- शर्की की बघेल से मित्रता से नाराज होकर लोदी ने 1488, 1494 और 1499 में बघेल पर 3 बार हमला किया।

बघेल शासक और खिलजी सुल्तान

- मालवा के खिलजी और जौनपुर के शर्की के बीच प्रतिद्वंद्विता थी।
- ऐसे में बघेल राजा मालवा के विरुद्ध अपने शर्की मित्र का शुभचिंतक था।

कृषि माप

- चाहुरी, अड्डी, कुरुआ, पईला, कुरई
- औधिया नामक सस्ते धातु के औजार, सोहागपुर में तीर और सिंगरौली में हलबर्ड
- बघेलखंड के प्रमुख व्यापारिक केंद्र बाँधवगढ़, सोहागपुर, मैहर, सतना, रीवा, गहोरा और अरेल थे।



वास्तुकला

- कला परंपरा बघेल राजा बुलर देव के शासनकाल के दौरान विकसित हुई, उनकी रानी राजमलदेवी ने राजधानी गहोरा में राजभवन के पास बावडी और तालाब का निर्माण करवाया।
- राजा भाऊ सिंह की राणावत रानी ने रीवा में एक तालाब का निर्माण कराया, जिसे रानी तालाब कहा जाता है।

केवटी किला

- यह **रीवा** से **33 किमी.** दूर **महाना नदी के तट पर** 14-15 वीं शताब्दी में बनवाया गया था।
- जिसकी **नींव चंदेल शासक हम्मीर देव** ने रखी थी।
- बाद में **बघेल राजा शालिवाहन** ने इसे पूरा किया।

मेहर किला

- इसकी **नींव बघेल राजा ने भेदचंद्र** की सहायता से रखी थी, **चंद्रभान** ने **मेहर दुर्ग का** विस्तार किया था।

सोहागपुर गढ़ी

- इसकी **नींव वीर सिंह देव** ने रखी थी, जिसका विस्तार **सोहागपुर के संस्थापक रुद्र प्रताप** और उनके उत्तराधिकारी ने किया था।

बाँधवगढ़ किला

- **बाँधो पहाड़ी** पर स्थित, इसके निर्माण के बारे में कई कहानियाँ प्रचलित हैं।
- दूसरी शताब्दी में **मद्यवंश के राजा** ने **बाँधवगढ़ को अपनी राजधानी** बनाया।
- **9वीं से 12वीं शताब्दी** तक, किले पर **कलचुरी शासक** का कब्जा था।

कालिंजर किला

- इसके संस्थापक का कोई ठोस प्रमाण नहीं है।
- **शेर शाह** के उत्तराधिकारियों के पतन के बाद किले को **बघेल राजा रामचंद्र देव** ने **बिजली खान** से खरीदा था।
- लेकिन **1569 में अकबर** ने इसे **रामचंद्र देव से छीन लिया**। जिस पर पहले **कलचुरी, चंदेल, भर, बघेल, बुंदेल और मुगलों का शासन** था।
- इस किले में **मोती महल, रंग महल, जखीरा महल** बघेलों ने बनवाया था।

रीवा किला

- यह किला **बिछिया और बिहर नदी के संगम पर** स्थित है, इसकी **नींव शेर शाह सूरी** के छोटे बेटे **जलाल खान** ने रखी थी।
- जिसका **विस्तार बघेल राजा विक्रमाजीत** ने किला बनाने के लिए किया था।
- **कृष्णा सागर बाँध** किले में स्थित है।

सोहावल किला

- **सतना के पास** इस किले का निर्माण **10वीं शताब्दी में** किया गया था।
- 17वीं शताब्दी में **रीवा के राजा अमर सिंह** के सबसे बड़े पुत्र **फतेह सिंह** ने **गोसाइयों से** क्षेत्र हड़प कर वहाँ पर अपना **राज्य स्थापित** किया।
- **संगीत** के क्षेत्र में **बघेलखंड** का विशेष स्थान है।
- **तानसेन बघेल के राजा रामचंद्र के दरबार में रहते थे।**
- जिसमें **रामचंद्र ने तानसेन की ध्रुपद राग और तान** से प्रभावित होकर तानसेन को एक करोड़ **चंद्रकित टंका** दान किया था।
- **तानसेन का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था, उनके पिता मकरंद पांडे थे, जिनकी हजरत मुहम्मद गॉस ग्वालियरी के प्रति बहुत श्रद्धा थी।**
- **तानसेन को मोहम्मद गॉस की शरण में सौंप दिया गया।**
- **तानसेन ने संगीत की शिक्षा भी बाबा हरिदास से प्राप्त की थी।**
- **तानसेन दक्षिण में चला गया और वहाँ सुल्तान आदिलशाह के साथ रहा तथा वहाँ रहकर नायक बख्श की बेटी से राग सीखी।**

बुंदेला ठाकुरों का उदय

- यह **अयोध्या के राजा रामचंद्र** के सबसे बड़े पुत्र **लव के वंशज माने जाते हैं।**
- **गहिरबार वंश** के पंचम बुंदेला के पुत्र **वीर बुंदेला** ने 13वीं शताब्दी के मध्य में **मऊ मोहिनी** में अपनी **नई राजधानी** स्थापित करके **बुंदेलखंड राज्य की स्थापना** की।
- 14वीं शताब्दी में **जेजाक भुक्ति के स्थान पर** इस भूमि का नाम **बुंदेलखंड** रखा गया।
- **पृथ्वीराज चौहान ने 1182 में चंदेल शासक परमेश्वर पर हमला** किया और बुंदेलखंड के **महोबा** से सटे क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।
- **ऐबक ने 1202 ई. में बुंदेलखंड पर हमला** किया तथा 1231 ई. में **सुल्तान इल्तुतमिश**, 1247 ई. में **सुल्तान नसरुद्दीन**, 1490 ई. में **सिकंदर लोदी**, 1530 ई. में **हुमायूँ** और **1545 ई. में शेर शाह सूरी** ने **कालिंजर पर हमला** किया।

ओरछा

- **रुद्र प्रताप सिंह बुंदेला (1501-1531 ई.) ने 3 अप्रैल 1531 ई. को ओरछा की नींव** रखी।
- **रुद्र प्रताप ने गढ़ कुंडार और ओरछा दोनों पर शासन किया।**
- **रुद्र प्रताप का कार्यकाल (1501-1531 ई.) था।**

भारती चंद (1531-1554 ई.)

- रुद्र प्रताप के बाद उनके पुत्र भारती चंद ने ओरछा को पूरी तरह से राजधानी बनाया।
- इन्होंने ओरछा का किला, परकोटा, राजमंदिर, रानी महल और नगर आश्रय का निर्माण कराया।

मधुकर शाह (1554-1592 ई.)

- इस दौरान शेर शाह सूरी ने 1544-1545 ई. के बीच कालिंजर पर हमला किया और 22 मई 1545 ई. को शेर शाह की वहीं मृत्यु हो गई।
- जतारा (टीकमगढ़) को इस्लाम शाह ने जीत लिया और उसका नाम बदलकर इस्लामाबाद रख दिया।
- जिसे भारती चंद ने फिर से बदल दिया।
- उसने 1574, 1588 और 1591 ई. में तीन बार मुगलों पर हमला किया, लेकिन हर बार माफी माँगकर बच गया।

वीर सिंह बुंदेला (1605-1627 ई.)

- राजकुमार सलीम की सलाह पर, वीर सिंह देव ने अकबर के मंत्री अबुल फजल को मार डाला।
- सलीम अक्टूबर 1605 ई. में जहाँगीर बादशाह के नाम से गद्दी पर बैठा और सार्वजनिक रूप से कहा कि उसे वीर सिंह देव की वजह से सिंहासन मिला था और इस तरह वीर सिंह देव को ओरछा की गद्दी मिली।

जुझार सिंह बुंदेला (1627-1635 ई.)

- 1635 ई. में, जुझार सिंह ने गोंडवाना पर आक्रमण किया और गोंड राजा प्रेम नारायण को मार डाला, इससे नाराज होकर शाहजहाँ ने औरंगजेब के अधीन एक सेना भेजी और ओरछा पर हमला किया।
- इस मुगल अभियान में चंदेरी, दतिया के बुंदेल शासकों ने भी मुगलों का साथ दिया।
- जुझार सिंह ने अपने भाई हरदोल पर शक किया और उसे जहर देकर मार डाला, जिससे वह अत्यधिक घृणा का शिकार हो गया।
- ओरछा के पास झाँसी में मराठा शक्ति स्थापित होने के कारण विक्रमादित्य बुंदेला ने 1783 ई. में ओरछा के स्थान पर टिहरी को अपनी राजधानी बनाया।

पृथ्वी सिंह (1736-1753 ई.)

- इनके शासनकाल के दौरान, झाँसी के सूबेदार नारोशंकर थे। 1742 में ओरछा पर आक्रमण किया, उसने झाँसी के बड़े क्षेत्र पर विजय प्राप्त की और इसे अपना मुख्यालय बनाया।
- पृथ्वी सिंह ने ओरछा के पास पृथ्वीपुर नामक एक किले का निर्माण करवाया और इसके चारों ओर पृथ्वीपुर नामक एक शहर बसाया।

विक्रमजीत सिंह (1776-1817 ई.)

- विक्रमजीत सिंह ने लगभग 41 वर्षों तक शासन किया और अंग्रेजों से दोस्ती का हाथ बढ़ाया।
- 1783 ई. में ओरछा की राजधानी के स्थान पर टिहरी का निर्माण किया गया। उन्होंने कृष्ण के दूसरे नाम टीकम के आधार पर 1785 ई. में टिहरी का नाम टीकमगढ़ रखा।
- 23 दिसंबर 1812 ई. को अंग्रेजों और ओरछा राज्य के बीच एक सुरक्षा संधि पर हस्ताक्षर किए गए। इस संधि में ओरछा राज्य की ओर से दुक्कनलाल तथा ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से जॉन वॉकर थे।
- जिसके तहत कंपनी को ओरछा राज्य के बाहर सुरक्षा का जिम्मा सौंपा गया।

धर्मपाल सिंह (1817-1834 ई.)

- इन्होंने सिंधिया के फ्रांसीसी कमांडर जीन-बैटिस्ट को हराकर उसे अपने अधीन किया।
- अपने समय के दौरान लॉर्ड हेस्टिंग्स 1817 ई. में पिंडारियों को दबाने के लिए बुंदेलखंड आए थे।
- पिंडारी दमन में धर्मपाल ने उनकी सहायता की।
- धर्मपाल की तीन पत्नियाँ थीं - गराई सरकार, लड़ाई सरकार और हरई सरकार,
- लड़ाई सरकार ने 1842 ई. के विद्रोह में अंग्रेजों का पूरा समर्थन किया।
- लड़ाई सरकार को ओरछा राज्य की विक्टोरिया कहा जाता था

बार-चंदेरी राज्य

- चंदेरी नगर को मालवा का प्रवेश द्वार माना जाता है
- 1304 ई. में सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के समय चंदेरी पर कब्जा कर लिया गया था।
- 1401 ई. के बाद मालवा के दिलावर खान गौरी ने चंदेरी और मालवा को दिल्ली से अलग किया।
- चंदेरी में प्रसिद्ध सूफी संत हजरत मुद्दीन रहम सुल्तान भी थे।
- कुछ समय के लिए चंदेरी के शासक मेदिनी राय थे, जो राणा सांगा को अपना संरक्षक मानते थे।
- 1528 ई. में बाबर द्वारा राणा सांगा को हराने के बाद चंदेरी पर हमला किया गया था।

चंदेरी राज्य की स्थापना

- प्रथम राजा- रामशाह बुंदेला (मधुकर शाह के बड़े पुत्र) थे।
- बार नामक स्थान उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में आता है।

मोर प्रहलाद (1802 -1842 ई.)

- अपने समय के दौरान, ग्वालियर के सिंधिया के फ्रांसीसी सेनापति जीन बापिस्ट ने चंदेरी पर हमला किया और 1810 ई. तक चंदेरी के दो तिहाई हिस्से पर कब्जा कर लिया।
- इससे प्रसन्न होकर सिंधिया ने महारौली के निकट जरिया गाँव की जागीर बापिस्ट को प्रदान की, जिससे बापिस्ट बुंदेलखंड का एकमात्र यूरोपीय प्रमुख बन गया।
- इस तरह चंदेरी राज्य ग्वालियर रियासत का हिस्सा बन गया।

दतिया राज्य

- प्रथम राजा- भगवानदास बुंदेला (वीर सिंह देव बुंदेला के पुत्र)
- वर्तमान में इस राज्य को छोटी बरौनी के नाम से जाना जाता है।

दलपत राव बुंदेला (1678-1707 ई.)

- उनका मूल नाम प्रताप सिंह था।
- शीर्षक- दलपत राव
- इन्होंने दतिया में एक विशाल किला बनवाया जिसे प्रतापगढ़ किला कहा जाता है।
- उस समय सरकारी कागजों में दतिया को दलीप नगर भी कहा जाता था।
- 1658 ई. में दलपत राव ने औरंगजेब के साथ, छत्रपति शिवाजी महाराज के पुत्र राजाराम के खिलाफ जिंजी गढ़ पर हमला किया और उसे जीत लिया।
- औरंगजेब ने इन्हें जिंजीगढ़ के विजेता की उपाधि दी और किले का एक द्वार पुरस्कार के रूप में दिया।

पारीछत बुंदेला (1801-1839 ई.)

- 1804 ई. में पारीछत ने अंग्रेजों के साथ एक सहायक संधि पर हस्ताक्षर किए।
- लॉर्ड हेस्टिंग्स 1818 ई. में पिंडारियों को दबाने के लिए बुंदेलखंड आए, पारीछत ने उनकी हर संभव मदद की। इससे उन्हें चौरासी इलाका और लॉट बॉक्स नामक दो तोपे मिली।

गोविंद सिंह (1907-1947 ई.)

- यह दतिया के अंतिम राजा थे।
- इन्होंने 1908 ई. में प्रिंस ऑफ वेल्स के इंदौर दरबार, 1911 ई. में दिल्ली दरबार, 1916 ई. में लॉर्ड चेम्सफोर्ड के नरेश मंडल में भाग लिया।
- गामा पहलवान उनके जमाने के थे।
- इनके समय, 1943 में, राज्य के दीवान देवी सिंह को हटा दिया गया था और नईमुद्दीन को दीवान नियुक्त किया था जिसके विरोध में दतिया के लोगों ने सड़कों पर उतरकर 'दतिया पीपुल्स कमेटी' का गठन किया।
- 1948 में दतिया राज्य का मध्य भारत में विलय हो गया।

पन्ना राज्य

राय बुंदेला

- चंपत राय बुंदेला महाराजा छत्रसाल बुंदेला के पिता थे।
- इन्हें ओरछा राज्य की महेबा की छोटी सी जागीर नूना-महेबा या महेबा चक प्रदान की गयी। चंपत राय ने भी 1636 से 1641 ई. तक ओरछा पर कब्जा कर लिया था।

छत्रसाल बुंदेला (1675-1731 ई.)

- छत्रसाल बुंदेला ने बुंदेलखंड के पूर्वी भाग के डुंगाई क्षेत्र में नए पन्ना राज्य की स्थापना की।
- 16 साल की उम्र में छत्रसाल ने दक्षिण भारत के मुगल सेना नायक मिर्जा राजा जय सिंह की सेना में काम करना स्वीकार किया।
- मुगल अभियान के दौरान, इन्होंने मराठा छत्रपति शिवाजी से मुलाकात की और स्वराज में सहयोग करने का फैसला किया।
- शिवाजी ने उन्हें बुंदेलखंड में स्वराज के सपने को साकार करने की जिम्मेदारी दी।
- छत्रसाल ने धमोनी के आस-पास के मुगल क्षेत्र में गोरिल्ला युद्ध की मदद से छापा मारा।